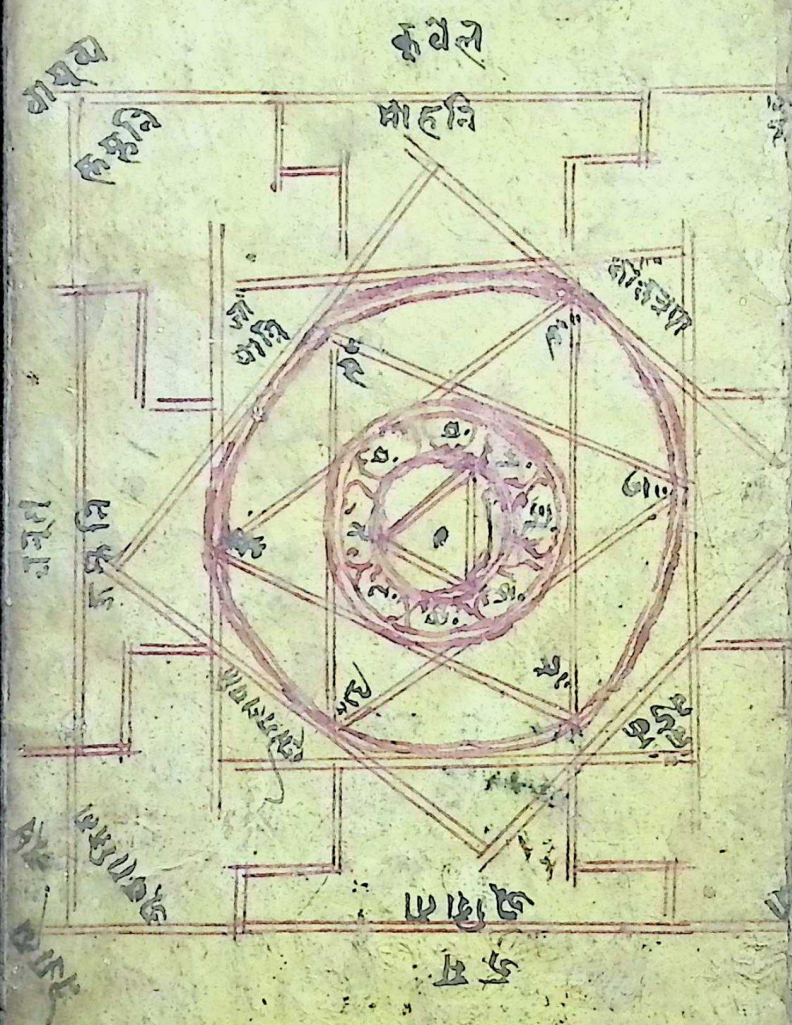


भैरवादि विविध-
पूजा विधि संग्रह
(०१२)

फो- २७

अस्मत्तनास्माधिपति प्रीतीकय जमक म
 नातीतो अववसिं भूतसंतान रुद्धि वसु ॥
 वाहू मे सूर्य जन धन ले श्री संतति संता
 धिर्धैरु फापा दया ॥ वा जान प्रति पालेय
 वधिना वन मुख वर सुंदर प्रजामा दिता ॥
 स्ति प्रमादा सदा ॥ ॥ स्ति प्रजाना



वदुतानां संस्ति वचना च ॥ अकृष्ण वन रु
 सा वाची तता न्यायादि वक्रमा ॥ अकृतं वा
 नक्रियाहीनं रुक्मिणी तथेति च ॥ अकृतं

मिनक्षमयावस्यविक्रम ॥

ताय. पेलवास. अजाम का ध नि येता न

अहवालया १२

आमलसि १

दि। वि. रु १३

कर्तुपता का ८

कर्तुपता का १८

पंचपता का ३०

धूप वास

पञ्चनक्षत्र काय उका ८३

पञ्चपालपयर्वक स ७

य. दक्षिण हा क. खगधुन

पश्चिम. ताय. उहवयोद

मन्त्र हा क. गोदू ॥

पञ्चसप्त का १७ १

कडक १ रवीलु क ४

थलु। लिउया १ नावा १

क. ल. म. तो हा धं ७ ७

माये १. सिधुमूड ग्य १

क्रि. क. नपा १

म. य. ग. मानया ला हाथन

कृच्छि लाय क हा म। सि

दुमिमथ घा १

हामपा ७ १

या। त. ग्य ७ १

त. ला व. पा. १

सिंधुनिका एक ॥

लं. व. क. पंचव. न. रु २

शोडका पक १

वाइपधिव १

धपिनिधं ७

सिंधुलिना ७

शोडका १

नकवदन

छानवा क १

अदत क १

हामल क १

धल क १

लं. छा. क १

विहिरह १

साइइवा १

सोधलिपा १

पंचामृत १

पंचभाला १

भालासंथन

अ. पाय.

वाडू वेल

वाक. हाक

पाल धत

प्रवस

दुहुहिरुय

दक्षिण

इ. पक्षि म

नासाक. उह

धम। धस

प्रक्रिया

आपूर्जावस

(व. यत्ना १) पूजा
 मो. अर्क २ - ताप
 मो. लय ३ - लय
 यो. कलंगत ४ - मंग
 वा. इष्टनी ५ - किति
 जे. सपीकथ ६ - उति ३मा
 ना. वडसिन ७ - उति
 म. कस ८ - का
 धनवसो-पादि

कर्ण
 कर्ण
 नकनंद
 हलपुं
 गभालख
 पुला
 सूर्यकांति
 वाढामन
 पवाकई २
 कवाकई ३
 जलिन्याल
 मालका

उजावेन
 मालने
 दाइपा
 नलेसि
 मालपा
 वलिपा
 जाजाधलि
 जा. आवा
 चलेपति
 दभवल
 (म)अस
 मालका

अवापान
 हल ५
 गहल
 अमल
 हल
 पशुप
 पुवंतु
 समख
 सतपुत्र
 नृपकेल
 यंत्रकेल
 हल. कर्क
 वलुनड १०८
 अगुलि
 गुगुलि
 माल. वच

पलाम १
 खदिन २
 अघल ३
 वेकंक ४
 वट ५
 सनि ६
 देवदात ७
 अवापान
 कनवीन ८
 दसन ९
 संतार्क १०
 विल ११
 आसान १२
 विलोख १३
 अंमख १४
 कर्कन १५
 सनद १६
 नागकाष्ठ
 धनअष्टा
 दभसि व

मनव
 पिपारि
 उगी
 हन
 गहन
 अंमन
 लेव
 जीदा
 उला
 सभा
 कपयि
 उवाक
 सध
 हकजा
 प्रीख
 लवला
 बाल
 यिम्
 धर्तपाज
 यावाप

आ. आ. वा
 सा. लयम
 अ. उवा
 वू. युका
 ह. यका
 उ. केय
 म. मास
 ना. सान
 के. कागोन
 ज. अकन
 प. १ जोले १०

नवग्रह
 ग्रीखलु
 अर्क
 पलास
 खदिन
 अवापान
 इवल
 वलम
 सनिकी ०
 उड
 कम
 बालमि

असा
 असा
 असा
 असा
 असा
 असा
 असा
 असा
 असा
 असा

पद्मकजोदव का क माल. दधक
 पलि चय माल. अरुमध प. वा. थ
 लक ता. थ. मतप माल
 वसि याय. अकक निमाल

ॐ नमः सहस्रं नवायनमः ॥ ॥

अथ हे नवाग्निं जह विधिलिख्यते ॥ जज

मान सूर्याय याव कर्ता ॥ जजमान न

वायं पादपद्मान याव कर्ता ॥ पूषा राजन

याव कः ॥ ॥ तमा कलसा चर्षी ॥ सूर्याय

युवममस्काव ॥ न्यास ॥ ॐ शं सः ॥ अश्व

यद्गु कनसाधनं ॐ शं सः ॥ अंगुक्ताय न

मः ॐ शं सः ॥ तर्कन्यायनमः ॥ ॐ शं सः ॥

मथ्यमायनमः ॥ ॐ शं सः ॥ अनाधिकायन

मः ॥ ॐ शं सः ॥ कनिष्ठकायनमः ॥ ॐ शं सः ॥

अश्वयद्गु ॥ ॐ तिकर्तव्यास ॥ ॥

ॐ शं सः ॥ गिनसंखाहा ॥ गिरायाय वोषट्

३ कवचाय हुं ॥ ३ नैऋत्याय वषट् ॥ ३ के

वचाय हुं ॥ ३ नैऋत्याय वषट् ॥ ३ अश्व

यद्गु ॥ ॐ तिमर्कन्यासः ॥ ॥

कं ॥ ॐ भनाय दुर्धवकायनमः ॥ यंत

न्यूनघाय पूर्ववकायनमः ॥ नैऋत्याय

वदक्षिणवकायनमः ॥ वं वामदेवाय

उत्तरवकायनमः ॥ वंसुधाजाताय प

श्चिमवकायनमः ॥ कं ॥ ॐ भनाय दुर्ध

वकायनमः ॥ ॐ तिवर्कन्यासः ॥ ॥

षडंगन अर्घपाण पूजा ॥ आवाय ध

नमूडा ॥ आत्मपूजा ॥ अहा अंगुलि

नक्षत्राय ॥ ॥ आत्मते ॥ ॐ शं सः

आर्धनसकथनमः ॥ ॐ शं सः ॥ वृषा

स्नायनमः॥ ध्यानं॥ जगद्वस्तुविकसं
कासं विनयं चन्द्रमोलितं वनदारुग्रह
सुखं मृदामालाधवंदेन॥ एवं ध्यात्वा
महादेवी॥ ॐ ह्रीं कामाथसिद्धये॥ ॐ ह्रीं
सः मृत्युं जयाय अमृताध्वनाय महा
लक्ष्मीं हारिताय ॥ ॐ ह्रीं संपादिकां॥ ॐ
जां गंगाय नमः॥ २ यमूनार्थे नमः॥ २
कावचिनमः॥ २ कौलकी नमः॥ २ न
र्मदायिनमः॥ २ आयु मूर्त्ती नमः॥ २ स
फलाग्नयानमः॥ २ संपूर्णकलसमू
र्त्यनमः॥ ॥ त्रं ॐ न्यायवज्रहस्त
यजुलाधिकयनमः॥ नैऋत्यदि
हस्तार्थं जाधिकयनमः॥ मूर्जमायद
लुहस्तार्थं पुनाधिकयनमः॥ दूनेमत्या
यवज्रहस्तार्थं वाहताधिकयनमः॥
वं वनूधाय पाठाहस्तार्थं जलाधिक
यनमः॥ यूं वायुव्यधजहस्तार्थं यवना
धिकयनमः॥ मूं कृवनाय गडाहस्तार्थं
नमः॥ दूं णीका नाय विष्णुलहस्तार्थं
हृग्राधिकयनमः॥ अूं अनन्ताय चक्र
हस्तार्थं नाग्राधिकयनमः॥ ॐ बुधार्थं
पद्महस्तार्थं स्वर्ग्राधिकयनमः॥ ॥
ॐ निलोकपाल॥ ॥ ॐ अस्वस्वा
मायनमः॥ ॐ वलि वनमः॥ ॐ व्यासाय
नमः॥ ॐ हनूमन्ताय नमः॥ ॐ विहिष

नाथनम ॥ ॐ कृपायनम ॥ ॐ पत्र
 पुत्रायायनम ॥ ॐ मार्कण्डेयनम ॥
 ॥ ॥ मटिपद्यादियं दहति चित्त्वा
 नम ॥ अमुं व्यादिभूत्वा विंशति नद
 पुत्रानमः ॥ विष्कं हादिसुका विंश
 तिष्ठा (ग) त्वा नम ॥ भस्वादिना दहा ना
 धित्वा नम ॥ मूकल त्वा नम ॥ वक्षिका
 दिसुफमाधित्वा नम ॥ ॥ अनन्ता
 यनम ॥ वायु कीनम ॥ तदकायनम ॥
 कुलिकायनम ॥ कर्कोत कायनम ॥
 हास्वपादायनम ॥ पद्मायनम ॥ म
 हापद्मायनम ॥ ॥ धम्मियन
 म ॥ विद्यायनम ॥ कलायनम ॥ नि
 धिर्लिनम ॥ पतित्वा यनम ॥ वक्ष (व)
 नम ॥ विष्क वनम ॥ नृपायनम ॥ हादा
 धिवायनम ॥ ॥ धम्मनायनम ॥ संपू
 र्णकलसयमूर्त्त त्वा नम ॥ शिवा ओ
 लि ॥ ॐ ध्मां कूलदृढमहासनसंभा
 हनास ॥ ॐ कलतीर्थमनुदेवता
 कलान ॥ ॐ त्वाधिपत्यं ध्मां ध्मां
 प्रसंपूर्ण कलसमूहय ॥ ॐ ध्मां
 पाइका ॥ ॐ कूलसंहादा ॥ ॐ
 यनमः ॥ ॐ त्वादिस्वर्गं गनसंपूर्ण
 ॥ धर्मवलि ॥ प्रायनम ॥ कल्लन ॥

५ पुत्रविष्कृतात्मना आत्मविद्या विवतत्वाधिपकय

लक्ष्मीयनम ॥ सिधुमूढ ॥ ॥
 काँकाँकूँ कण्ठपालायनम ॥ वलि ॥
 दध्दं इस ॥ श्रीजी कलपूवद के
 नाथयनम ॥ म्पालनेयघस ॥ (ले)
 श्रीकूलग (६) नगायनम ॥ उजावसा
 थव २ मंनं वलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥
 उँ शंस १ सारा १० ॥ सा ॥ नत्तावधि
 सकलगीर्थजलनपूरुष स्वकणवन्नर
 वसाहितपूषमाला ॥ ऊरू वजाह विष
 यमनिहिषं सत्ता कुरु मूर्तिमिवठा
 कियुतं नमानि ॥ अगग भदि ॥ ॥
 ॐ न कल सपूजा ॥ ॥ ॥

तमापचैषा वप्रजनं ॥ वंधयातस ॥ जाँ
 जाँडूँ सूर्ययनम ॥ प्राँ प्राँ पूँ सा माय
 नम ॥ यधयातस ॥ जाँ जाँ कूँ अंग
 नायनम ॥ वाँ वाँ वूँ वक्षयनम ॥ या
 धयातस ॥ जाँ जाँ कूँ वृहस्पतयनम ॥
 जाँ जाँ डूँ उजायनम ॥ यधयातस ॥
 अँ प्राँ मूँ हानिधनायनम ॥ जाँ जाँ
 कूनाकूवनम ॥ जाँ जाँ डूँ कण्ठवनम
 ॥ जाँ जाँ डूँ जर्मननम ॥ थव २ मनु
 नवलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ सा ॥
 सूर्यहामहिपूष वधदवागुनाहगु ॥
 हानिधनगृहावाक कण्ठजर्मनम ॥ मुता ॥

नाथनम ॥ ॐ कृपायनम ॥ ॐ पत्र
 पुत्रासाधनम ॥ ॐ मार्कण्डेयनम ॥
 ॥ ॥ मटिपद्यादियं दहति चित्त्वा
 नम ॥ अमुं व्यादिभूत्ता विंशति नद
 पुत्रानमः ॥ विष्कं हादि सुका विंश
 ति यो गत्या नम ॥ भेत्वादि द्वादश ना
 धित्यानम ॥ मूकलत्या नम ॥ वक्षिका
 दिसफसाधित्यानम ॥ ॥ अनको
 यनम ॥ बाधुकीनम ॥ तदकायनम ॥
 कुलिकायनम ॥ कर्कोतकायनम ॥
 हांखेपादायनम ॥ पद्मायनम ॥ म
 हापद्मायनम ॥ ॥ धम्मियन
 म ॥ विद्यायनम ॥ कलायनम ॥ नि
 धिर्लिनम ॥ पतित्कायनम ॥ वृक्ष
 नम ॥ विह्वनम ॥ नृजायनम ॥ हादा
 धिवायनम ॥ ॥ धम्मनायनम ॥ संप्र
 र्थकलसयमूर्त्तित्यानम ॥ शिवा ओ
 लि ॥ ॐ धम्मं कूलदृढमहासनसंभा
 हनास ॥ ॐ कलतीर्थमनुदेवता
 कलान ॥ ॐ त्वाधिपत्यं धम्मं धम्मं
 प्रीतिं धम्मं कलसमृपय ॥ ॐ धम्मं
 पाइको ॥ ॐ धम्मं ४ दया ॥ ॐ
 यनमः ॥ ॐ धम्मं दिव्यं ॐ गनसंप्र
 ॥ धर्मवलि ॥ ध्यायनम ॥ कल्लन ॥

५ पुत्रविष्णुनाथना आत्मविद्या विवतत्वाधिपकय

लक्ष्मीयनम ॥ सिधुमूढ ॥ ॥
 कौं कौं कूँ कृणुपालायनमध ॥ वलि ॥
 द धं इ सु ॥ श्रीजी कृत्तपूवद क
 नाथयनमध ॥ म्पालनेयघस ॥ (लो
 श्री कृत्तग (ध) न्वायनमध ॥ उजा व सा
 थव २ मं पुनं वलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥
 उं शं स १ स्यादा १० ॥ क्षा १ ॥ नत्ता वधि
 सकले गीर्थ जलन प्रभु स्व कृणवत्तर
 वसाहित प्रथमात्मा ॥ कृत्त वजा हविष
 यमृनिहिषं सत्ता कृत्त मूर्ति विवठा
 किं यत्नं नमनि ॥ अगग भदि ॥ ॥
 ॐ नित कल सप्रजा ॥ ॥ ॥

तमा पचे पा वप्रजनं ॥ वंध यातस ॥ जा
 जीं कूँ सु र्वायनमध ॥ प्रां प्रां पूं सा माय
 नमध ॥ यंध यातस ॥ जां जीं कूँ अंग
 नायनमध ॥ प्रां प्रां पूं वृक्षयनमध ॥ या
 थ यातस ॥ जां जीं कूँ दहस्प गयनमध
 जां जीं कूँ उजायनमध ॥ यंध यातस ॥
 अं प्रां पूं धानिध नायनमध ॥ जां जीं
 कृत्त कृत्त वनमध ॥ जां जीं कूँ कृत्त वनम
 ॥ जां जीं कूँ जर्मननमध ॥ थ व २ मन्
 नवलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ क्षा १ ॥
 सु र्वासा महिपू. वृधदवा गुनाह गु ॥
 धानिध नगृहा नाह कृत्त जर्मनमधुत ॥

अङ्ग-आदि ॥ ॐ ति पञ्चैषान् प्रजा
॥ ॥ ॥

तत्ता वलि प्रजनं ॥ पञ्चमहा कल अ
न्यास ॥ जल पाय ॥ अर्घ्य पाय ॥
उक्त उदि ॥ अन्म प्रजा ॥ प्रजन ॥
पिदव ॥ वस्त्र न्यादि ॥ अध्याय ॥
वज्रवति हि ॥ धर्म नवलि ॥ ॥
(मध्यायया शूल. आययया. मूल
मन्त्र नयिया ज्ञेति ॥ दण्डनं पञ्चम
॥ तलि ॥ कोंक्री अस्त्राय रुद्र साहा
अरु नीनम ॥ संखत केनम ॥ धमि
वलि गृह २ साहा ॥ वृषनीनम ॥ स्म
साने वासिनि ॥ खचनी ॥ ॐ ह्युयानि
निनम ॥ ॐ ह्युहैव वायनम ॥ वि क
राधनीनम ॥ लम्बा कर्षनीनम ॥ हं हं
कानजी कुं कुं काही स्यामि त्या वलि
गृह २ साहा ॥ लोकमहा वलि नधून
क ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ कण्ठन १०
स्तोत्र ॥ प्रवृद्धदिन. पङ्क्ति साहवृत्ति वा
पूर्वाधिसालासिका. कृष्णमावटु ट
इर्नहननं हवचना अयव ॥ स्मसाने
धननाधिदवदुहि साकाधिइत्यप्रदा
॥ निर्यानन्दमही प्रमानदितसावल्या
धिप्रजाविधि ॥ तर्पण ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॐ ति वलि प्रजा ॥ ॥

नमो कुरु पूजन ॥ अष्टावाहनक
 व अंग न्यास ॥ जल पात्र ॥ अर्घ्य पा
 त्र ॥ अर्घ्य पात्र पूजा ॥ पूजन ॥ विद
 व ॥ अष्टौताम्रदि ८ ॥ वस्त्र न्यादि ॥
 श्राद्ध ॥ श्री कल कुरु हृदाविकाया
 दू ॥ श्री अलिमूर्त पात्रका ॥ शिवा
 ॥ ॥ वज्र ॥ अष्टावाहन ॥ वज्र
 स्वननसंप्रदा ॥ थव ॥ मरु
 नं वलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप १० ॥ स्तो
 त्र ॥ वज्रकायकनकन कार्त्तिकमान
 यित्व ॥ स्थानस्थानविदुवनगुन उच्यते
 सप्रसन्न ॥ अष्टावाहनसामर्थ्य कन
 पनउभयर्मा ॥ सङ्कटं हनन् ॥ मनुनि
 दह कल नृपिनी ॥ इति कुरु पूजा ॥ ॥

नमो नन्दिलीपूजनं ॥ वलिनी न्यास ॥
 जल पात्र ॥ अर्घ्य पात्र पूजा ॥ दुग्गुद्धि
 ॥ आत्मा पूजा ॥ पूजनं ॥ पंच वलि ॥
 विदव ॥ यानि ॥ अष्टादित्य कपाल १०
 ॥ यथादि ३ ॥ मङ्गल किनि ६ ॥ वस्त्र न्या
 दि ८ ॥ वज्र ०४ ॥ अष्टावन ॥ वलिनि
 ॥ ॥ गभयशत्रुता भयसा मूल मनु
 नयि शो जलि ॥ वज्र ॥ वलि ॥ वज्र
 ॥ हकाल ॥ सकार ॥ धनं वलि ॥ आ
 वा ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ स्तोत्र ॥
 इति धन्दिलीपूजा ॥ ॥

तथा अग्नि कार्य का नयन ॥ ॥

सूर्यार्घ्य ॥ अथादि मासनक्षत्र ॥

वर्धुर्न वीजमध्वत्यादि ॥ युवनम

क्ताव ॥ न्यास ॥ ऊँ अस्माय रुट् ॥ क

नसा धनं ॥ ऊँ कनिष्ठा काय नमः ॥

ऊँ अनामिकाय स्वाहा ॥ ऊँ मध्व मा

य नो षट् ॥ ऊँ तर्जु न्याय रुं ॥ ऊँ अस्मा

य रुट् ॥ ॐ ति कर्त्तव्य न्यास ॥ ॥

ऊँ ॐ श्री नारायण उर्ध्व वक्त्राय नमः ॥

अंतस्य पृषाय पूर्व वक्त्राय नमः ॥

न अक्षो वायव्यदिन वक्त्राय नमः ॥

व वायव्यदिन वक्त्राय नमः ॥

सं स याज्ञाताय पश्चिम वक्त्राय नमः ॥

ऊँ ॐ श्री नारायण उर्ध्व वक्त्राय नमः ॥

ॐ ति कर्त्तव्य न्यास ॥ ॥

ऊँ हृदयाय नमः ॥ ऊँ शिखराय स्वा

हा ॥ ऊँ कवचाय रुं ॥ ऊँ भगवता

य वषट् ॥ ऊँ अस्माय रुट् ॥ ॐ ति

अर्जुन न्यास ॥ ॥ जलपात्र अ

र्घपात्र ॥ रुत सुदि ॥ आत्म पूजा ॥

चतुर्भिः स्थान ॥ ॥ ऊँ ऊँ रुं

शिखाय रुं चंद्रमहा रुं वक्त्राय नमः ॥

निविद्ध लंछन दिक्षि नसाय ॥ ऊँ

अस्माय रुट् ॥ आदत्तं ॥ अस्माय रु

८॥ जा काया ॥ जाँ ददया यनम ॥
 को न र्थन ॥ जाँ हिन सखा हा ॥ माथ
 हा न ॥ ऊँ कव वा य दू ॥ अर्ध पा जल
 खन हा य ॥ ऊँ अस्त्राय रुट ॥ कृष्ण
 पुन हा य ॥ ऊँ कव वा य दू सै मा दू न
 उँ मा खन विवि न ॥ अ क पा त न ॥ क
 हा न पू आ न म ॥ उँ कृष्ण २ म ध ॥ जाँ
 कृष्ण २ पूर्व ॥ ओ कृष्ण २ दक्षि ॥ ॥ ॥
 कृष्ण २ पश्चिम ॥ ओ कृष्ण २ उत्तर ॥
 ॥ ऊँ कव वा य दू ॥ उँ क स म य कृष्ण
 यनम ॥ अग्नि कृष्ण स का न सा उ यि
 म ॥ क स य पु न न खा त ॥ ॥ ॥ म कु
 ऊँ अस्त्राय रुट ॥ पत वा स न व ज अ य
 ॥ म कु ॥ ऊँ अस्त्राय रुट ॥ ० ॥ ऊँ अ
 स्त्राय रुट ॥ कृष्ण पु न खा ० दय कं त
 च उ स थ ॥ + ॥ जाँ ददया यनम
 ॥ ० ॥ खा दित उँ ग न सं पू ॥ ॥
 ॥ ति अस्त्राय रुट ॥ स लाल ॥ ॥

ऊँ अस्त्राय रुट ॥ अर्ध पा ज स खा द
 खान न अ व गु ठ न ॥ पू ज न ॥ अ
 ल न म ॥ खान वा हा ल ॥ ऊँ अस्त्राय
 रुट ॥ कृष्ण पु न अ स्त्र त ॥ जाँ
 हिन खा ना थ य वि द ह ख ॥ अ
 य धी म ह ग न्त्र नू प प्र वा द या त ॥
 य ता स्त्र त म कु ॥ जाँ जाँ दूँ स्त्र ॥
 द म हा रुँ व वा यनम ॥ जाँ दद

यायनम ॥ ॐ स्वादिषु ॥ जनसंप
 म् ॥ आ वा म् ॥ नि म् ॥ पंच न
 त्रम ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ ॥

हामसि ऊऊमानस्यं आचार्यवि
य ॥ हामसिं अर्घपागलं खनहा
य ॥ ऊं अक्षायरुट ॥ अनवंसाच
कंटन ॥  टं ॥ ठिका नटं स्व
॥ सकहु  न ॥ अर्घपागलं ख

न होय ॥ विरु ॥ सिंधु ॥ ऊऊ म
का ॥ स्वान ॥ हामसि प्रजा ॥ ॐ

ॐ लोकोय नमः॥ ॐ स्वलोकोय
नमः॥ ॐ ज्ञानमहलोकोय नमः॥

ॐ ज्ञां तपला कायनेम॥ ॐ ज्ञां जने
ला कायनेम॥ ॐ ज्ञां सत्यला काय

नेमः॥ धनं कुरुते पूजने॥ प्रिक
न पूजा॥ पूर्व॥ ॐ ज्ञां आत्मनः त्वा

यनम॥ नैऋत्य॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमः
नत्वा यनम॥ वायव्य॥ ॐ ह्रीं श्रीं
नत्वा यनम॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमः

वतत्वाय नमः ॥ ॐ क्वा वाक्कि नूपाय
विद्यारुत ॥ ॐ सुप्रधी मरुत नो व
कि प्र नो दया ॥ ॐ नो दी ॥ सु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सुजाक्रू ॥ स्व
कृन्दमहाहेनवायसर्वतत्तामन
मः ॥ धर्तपुत्रं ॥ ॥ ततो वा

(गणेश्वरी प्रऊर्न॥ ॐ क्रांवा (गणेश्वरी मे
नम॥ ध्यानं ॥ अतस्मिं पृथ्वी का

सं. सर्वलक्षणसंयुतं ध्यायन्नदूर्ध्वं x
तोदवी वा। गणीवनेदासमः कथु
मध्यविचिंतयत ज्ञोदयायनमः
त्पादि ग्रेत्यादिषु उ। गहासं
पूयः

मूर्ध्ना कान्तिस्व्याहामितं कायाव
हिमताद्याथस कृष्णनयनं सिम
ताव्याहामितं लि कायाव जलिर्म्य
लसत मनु कं अक्रायरुट
क व्यादानि कं रुट निविद्धो
क अक्रायरुट तोउर्ध्वं कं कव
वायकं अवगुह्यनं षु उ। क्षेपसं
पूयः आकृतिवियमनु
कं अक्रायरुट क व्यादानि स्या हा
धान ३ धमेनेनं चृताकृति उका
प्रका निवर्तनयाय स्वपाल
मनु कं अक्रायरुट वलिवियम
नु उताय विविधां कोय उविदि
व्याकृति कृष्ण पातानटलवासि
न्या तनसं उ सिवाहृया उं ऊं स
र्वविष्म कटया सर्वरुतया वलि
रुद्र २ स्या हा ॥ कं अक्रायरुट ॥ क
व्यादानि विसर्जन ॥ वलि लोहास
कोय ॥ ॥

महाप्रजापति चतुसंस्कारः ॥ ॥

ॐ जौं जौं कूं स्वच्छन्द महाहं नवाय
नमः ॥ निविद हं ॥ जम्भाय रुद्र
प्रद हं ॥ जम्भाय दाता उ हं ॥
कं कववाय हं ॥ अवगुह्य हं ॥ ॥
सिमता चा० स. चण. सिंधु जगाम
कास्थान ॥ पूजन ॥ जौं जौं कूं स्वच्छन्द
महाहं नवाय नमः ॥ षडंगनसंप्र
श्न ॥ आवाक धनम् ॥ धतसिम
ता चा० पूजा ॥ ॥ चण्डिका० ल
वं वाताव. सिमता चाथन. अग्निक
लुहाय क. श्रीमं वलाय दपं धन ३ ॥
जपनपमनु ॥ जळं नु जथन शुभनि
कलपये जकी कलो नलग्न ॥ गं
नीनूं वक्रि चतन्याये नमः ॥ धन ३
जौं जौं कूं स्वच्छन्द महाहं नवा सर्व
तवाय नमः ॥ धन ३ ॥ स्वस्वदवीस
मूलमनु ॥ धन २० ॥ अद्यादि ॥
अग्निष्ठापनस्मृत्युत्साहा ॥ ॥
स्वस्ति कुं व्यावाकूप (वात स्वस्ति कु
प्यात्सदा विप्रि स्वस्ति मार्कं लुदवता.
पानिनी स्वस्ति सर्वात्र स्वस्ति पीठ
स्वकृणका पूर्वन्दक्षिणपश्चवउ
रुगार्धवनस्तथा स्वस्ति स्वका ग
मस्तु सुकृपाप्रकटदवता ॥ हं न

वीरुन वासा जा. स्वस्ति स्वस्ति ॥ स्वस्ति
का ॥ स्वस्ति मन्त्रा प्रस्ति मन्त्रा प्रस्ति ॥
निगानिका ॥ कवन ग्रन्थ नासि प्रस्ति
सर्वस्ति सफय ॥ स्वस्ति वीना प्रमत्ता प्र
योगि न्याग मनाशिका ॥ स्वस्ति देवा
धिदवत्तं मन्त्र नाजा निवन्तने ॥ रु
व्यपलालि लुका प्रस्ति कुलाग्नि
दवता ॥ स्वस्ति नाजा प्रजाना नु यज
माना स्वस्ति सर्वदा ॥

मालनीय ॥ ० ॥ पंचवलिदद्या ॥ ॥
अग्नि कुन्दस ॥ निभक्तान यय ॥ आ
काय ॥ मन्त्र ॥ जां हृदयाय नमः ॥

सदक्षि ॥ ६ ॥ पंचवलिदद्या ॥ ॥ ॥
मन्त्र नवलि ॥ ॥ अग्नि कुन्दस ॥

द्वंद्व पूजन ॥ ० ॥ आदिदहाला कपा
लन ॥ धनं वलि ॥ ॥ ॐ कव

वोयद्व ॥ अग्नि कुन्दस ॥ जां हृदयाय नमः
॥ अर्घ्य पात्रं खनहाय ॥ ॐ जां

वागस्वये नमः ॥ ॐ जां वागस्वये नमः
॥ ॐ अस्त्राय नमः ॥ वागस्वये नमः
॥ ॐ कनकनवदा विद्य ॥

चतुर्वेदिस. कृष्णं चिस्. सिलचिन् ॥
अस्त्र ॥ पूर्व ॥ हंसास्त्राय नमः ॥ ॐ

जां अस्त्राय नमः ॥ ॥ दक्षि ॥
दृष्टास्त्राय नमः ॥ ॐ जां हंसास्त्राय नमः ॥

पश्चिम ॥ गन्धर्वानामस्तु ॥ ॐ
जो वेद वेद नमः ॥ ॥ उक्तं ॥
पद्मास्तु नमः ॥ ॐ जो अनन्ता
नमः ॥ अतस्तदिष्टा ॥ ॥

अन्तासत्तिनकात् ॥ कृष्णप्रकृत ॥
बुद्धापनितपाप अर्धपापलं स्व
नहाय अमुमकुन ॥ म हा पाना
अमुमकुन पनितपापस लं स्व
नथान ॥ इति इह कृष्णगन्धि
त ॥ बुद्धा ॥ पनीतसचन्दनादि
जहा पवीत पूष्यत ॥ बुद्धास्वद
दिहा ल्हाय ॥ वाक् ॥ पीनपान
चतुर्वाह बुद्धास्वदुवानन ॥ हं
सजानप्रतिकारं दधुर्कपु क
मलुलं ॥ ॥ प्रजन ॥ ॐ
बुद्ध (नमः ॥ प्रजापतयनमः ॥
सर्वथादवत्यानमः ॥ ॐ जो हं ह
त्यानमः ॥ ॐ जो बुद्धमूर्धनमः ॥
ॐ जो बुद्धायनमः ॥ प्रज्जगतां
पूष्य ॥ आवाक् पद्ममूजा ॥ ॥
वृत्तिबुद्धा पूजा ॥ ॥
पनीतस्ववापस्त्वाप ॥ वाक् ॥ अ
नर्कपुलुनी कार्द ॥ दानां दधुर्कपु
तं ॥ विद्युतामपनी कार्द कर्मात्र

ॐ प्रजयत ॥ ॥ प्रजनं ॥ ॐ

जांग नृणां सोमनसः ॥ ॐ जांति कृ
मूर्त्यनमः ॥ ॐ जां अतिधानमः
ॐ जां पतितायनमः ॥ ॐ जां वैष्णवं
नमः ॥ ॐ जां सर्वथा देवत्वनमः ॥

ॐ गणसंपुञ्ज ॥ आवाक्यधनमस्तु
॥ ॥ ॐ त्रिवक्त्रपूजा ॥ ॥

ततांशुकप्रवासाधनं ॥ अमुनया
कृष्णं ॥ अमुमनुन. अग्निसयन. जि
क्ष ३ ॥ ऊहाकृच्छिहाकनपकाया वः
प्रवाष्टत्वा ॥ ॐ जां वृद्धाणां आत्म
तत्वाय नमः ॥ प्रवापात्स. कृष्ण
याफलनधियक ॥ ॐ जां त्रिविधा
तत्वाय वैष्णवं नमः ॥ प्रवामाध
कृत्याम. अधनधियक ॥ ॐ जां
मुं हिवतत्वाय नृणां नमः ॥ प्रवा
वांस. कृष्णानधियक ॥ ऊं अमु
यरुट ॥ प्रवासमार्जनं ॥ प्रवास
संखथेनमस्तु ॥ ॐ जां शिषोनाथा
यविग्रहविस्वभूतयधामह. तन्ना
नृदप्रअदयात ॥ ॥ ऊं अमु

यरुट ॥ प्रवासकृष्णनवात्म ॥

वत्सलाननय ॥ धन ॥ ॥

ध्रुवाहा वाहलंखकाव प्रवासंत
 ॥ अमुनधा ३ ॥ सग्ननववलख
 लानप ॥ प्रवान अग्नि कृष्णायक
 धान ३ ॥ प्रवायालंख पनीतसत
 अग्नि संत ॥ प्रवानिलि दक्षदिः
 चतुसंस्क्रान ॥ पंचेष्टुशका ॥ उव
 ह्युंवा ॥ मनु ॥ ऊं कंवचाय हूं ॥ व
 त सिधु जहा प्रवित खान कसा स
 नसत ॥ पूजन ॥ ऊं जांजी मिवाय
 नमः ॥ ऊं जांजी प्र वाहक नमः १ ॥
 ऊं जांजी प्र कृ प्र वा ल्यां नमः ॥ पउं
 (गन सं पूर्य ॥ सदकि (म कृष्ण सना
 पवि प्र वा स्ता पयित्वा ॥ ॥
 न्ति प्र वा पूजा विधि ४ ॥ ॥

नता ध क सा धनं ॥ अर्घ्य पापलंख
 नहाय ॥ मनु ॥ ऊं अमुनाय हूं ॥ अ
 मुन अग्नि स पन ॥ धान ३ चंदे वा
 न धव क स धलत ॥ ददय मनुनः
 अग्नि कृष्ण अग्नि कानस धन कन
 क ॥ कृष्ण ग्रंठिन गुठिन धव क स ॥
 दृत रिहा ग (थ ॥ दकिन नय ॥ ऊं
 जां अग्नि य सा हा ॥ वाम नय ॥ ऊं
 जां सा मा य सा हा ॥ द्वितीय नय ॥

ॐ ज्ञां अग्नि सामाया स्वाहा ॥ घृक हा
 गया कृष्ण ग्रन्थि चतुर्वान कायावः
 ॐ भन कन सदय ॥ ॐ ज्ञां अग्नि ॥
 विद न त्या स्वाहा ॥ मध्य सक स ग्रन्थि
 धन मूडां ॥ ऊज मान अ व ला कन ॥
 वाक् ॥ लीनं ज्ञां ह ग वा ज स्वा त ऊ ग
 त य प्र शू यत ॥ न मा मि त द हं लिं गः
 य कि म धा कि मा ग तं ॥ आ यो म् सर्व द
 क्ष सर्व पा त क ना स नं ॥ आ र्या पा प ह
 नं द द्या आ र्य पा व ह यं प नो ॥ आ र्य च उ
 स न क्ष मा र्यं सर्व मा नं प्रति स्मि तं ॥ ॥

तता घृता क्रुति विसर्ह ॥ ॐ ज्ञां उ स्वा
 हा ॥ ॐ ज्ञां उ उ व स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां उ व
 यं स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां उ प त य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां
 उ ता नां प त य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां ह य वा ह ना
 य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां क य वा ह ना य स्वा हा
 ॐ ज्ञां जा त व द य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां का ला
 य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां का ल पू र वा य स्वा हा
 ॐ ज्ञां सा मा य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां मृ त्यु जि यं
 ज्ञां त य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां ज मा य स्वा हा ॥ ॐ ज्ञां वे
 ता र्थि ता य स्वा हा ॥ ॥ अ ला चा
 प्र वा स तं ॥ त्या ग त ॥ ॐ ज्ञां अ सि ता न
 ह न वा य न म ॥ पू ज न ॥ ॥

आरुतिविममनु॥ॐ जां हृदयाय
 गहदाधनाय स्वाहा ॥ धमकुनं पृ
 ताकृति ॥ पूजन ॥ॐ जां नूरु ववा
 य स्वाहा ॥ आरुति ॥ॐ जां धिवम वृ
 सवर्धुय स्वाहा ॥ पूजनं ॥ॐ जां वधु
 हेन वाय स्वाहा ॥ आरुति ॥ॐ जां धि
 स्वाय श्रीमकानयनाय स्वाहा ॥ आना
 ल्पाख ॥ पूजन ॥ॐ जां ईं वक्रिमं प्र
 लुमं जलाय स्वाहा ॥ धमकुनं आरु
 ति ॥ मनीववकुगमकलत्रय ॥ पूज
 नं ॥ॐ जां जीं ईंदसम गहसं प्रलुम
 जलाय स्वाहा ॥ धमकुन आरुति
 ॥ॐ जां कोधहेन वाय स्वाहा ॥ पूज
 नं ॥ आरुती ॥ॐ जां जातवदसं क
 माय स्वाहा ॥ ध्यान ॥ आधवजातक
 माना वनाना जातमा कृमिं ॥ जाता
 ग्निध्यान कृच्छ्रि आतिनूपं विचिन्त
 यत ॥ प्रवदमालनीदक वामं हा
 किं कमलुर्ल ॥ मया वृटं जयद्वै ॥
 सकृजि हाने मा म्यहं ॥ नीलत्पल
 दलाकालं हेन वानि कृतासनं ॥
 आतिनूपं धनं ध्यात्वा समस्तं स्व
 शुद्धहेनवं ॥ ॥ ॥

तत्तावकुादिकनर्गं ॥ पश्चिम ॥
ॐ ज्ञां ज्ञं दूँ लं सघा जा ता य पश्चि
म व कुाय स्वाहा ॥ उरुन ॥ ॐ ज्ञां ज्ञं
व वा म द वा य उरुन व कुाय नम ॥
दक्षिण ॥ ॐ ज्ञां ज्ञं नं मघा ना य दक्षि
ण व कुाय स्वाहा ॥ पूर्व ॥ ॐ ज्ञां दूँ यं
तत्पू नू षा य पूर्व व कुाय स्वाहा ॥
मध्य ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां दूँ वी षा ना य उरु व
कुाय स्वाहा ॥ ॥ एकिकृत्वा व
जा दिकनर्गं ॥ ॐ ज्ञां दूँ पश्चिम व
कुाय स्वाहा ॥ वाथं ठा व र्यं हा य कं च
उ वा न ध न हा य के ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां व वा म
द वा य उरुन व कुाय स्वाहा ॥ र्यं वि न
न य थ न ॥ ॐ ज्ञां ज्ञं नं मघा ना य दक्षि
ण व कुाय स्वाहा ॥ र्यं वि न न वा थ न ॥
ॐ ज्ञां दूँ र्यं तत्पू नू षा य पूर्व व कुाय
स्वाहा ॥ वं ठा न या हा य कं मध्य स हा
य के ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां दूँ वी षा ना य उरु
व कुाय स्वाहा ॥ यं कृ लि न थ थ ठा व
मध्य स हा य के ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां दूँ वी षा
ना य उरु व कुाय स्वाहा ॥ यं कृ लि न
थ थ ठा व मध्य स हा य के ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां
दूँ दूँ ज्ञां ज्ञं ॥ पूर्व दक्षिण उरुन पश्चि
म उरु व कुाय स्वाहा ॥ यं कृ लि
न वं कृ लि थं ठा मध्य स हा य के ॥
ॐ ज्ञां ज्ञां दक्षिण व कुाय स्वाहा ॥

पूजन ॥ ॐ जाँ उन्मलहे नवायनमः ॥
 अर्घपागलखनहाय ॥ ॐ मृदाय
 रुट ॥ ॐ जाँ सयसूतकनासायसा
 हा ॥ आरुति ॥ पूजन ॥ ॐ जाँ कपा
 लिसहेलवायनमः ॥ आरुति ॥ ॐ
 जाँ कुँदादिलवजायजाँ जाँ कुँध्वन्द
 मलहेनवायनामककुशयसाहा ॥ ॥
 पूजन ॥ ॐ जाँ हृदयायनमः ॥ ॐ जाँ
 रुत्तपासायसाहा ॥ ॥ पूजन ॥
 ॐ जाँ हीषलहेनवायनमः ॥ आरु
 ति ॥ ॐ जाँ अन्नेप्रासनायसाहा ॥
 पूजन ॥ ॐ जाँ कुँदादिलवजाय क
 कुहिदायसाहा ॥ कृष्णानकपरव
 न ॥ ॥ पूजन ॥ ॐ जाँ कुँ श्रीशिर
 ध्वन्दमलहेनवायनमः ॥ आरु
 ति ॥ ॐ जाँ कुँध्वन्दमलहेनवा
 यवतवन्धनायसाहा ॥ ॥
 पूजन ॥ ॐ जाँ हृदयायनमः ॥ आरु
 ति ॥ ॐ जाँ विवाहायसाहा ॥ विवा
 हा ॥ ॥ दीक्षाविय ॥ षष्ठजन ॥
 ॐ जाँ संहावहेनवायसाहा ॥ थनेआ
 इति ॥ ॥ ॐ तिदहाकर्म ॥ ॥

खामतुयाजलापनितसत ॥ ॐ जाँ वा
 ग्मयनमः ॥ ॐ जाँ वाग्मयनी वि
 सर्जन ॥ ॥ ॥

तनादिकासंभन ॥ ॐ जां कुं हिन
 न्यायस्वाहा ॥ नेमस्य ॥ ॐ जां नूंक
 निकायस्वाहा ॥ पश्चिम ॥ ॐ जां वूं
 नीकायस्वाहा ॥ वायव ॥ ॐ जां ॐ
 दसायस्वाहा ॥ अग्नि ॥ ॐ जां कुं सु
 प्रहायस्वाहा ॥ पूर्व ॥ ॐ जां मुं अति
 निकायस्वाहा ॥ ॐ भन ॥ ॐ जां कुं
 संवदूपायस्वाहा ॥ मध्य ॥ जिह्वा
 कल्पन घृतधानश्रुयात ॥ नेमस्य
 दिमब्धतं ॥ ॐ जां नूंक हिन नूंक नि
 कायस्वाहा ॥ नेमस्य वनूहा ॥ ॐ जां
 ॐ ॐ कस्य सप्रहायस्वाहा ॥ अ
 ग्नि पूर्व ॥ ॐ जां ॐ ॐ नका दसा
 यस्वाहा ॥ वायव अग्नि ॥ ॐ जां ॐ ॐ
 उपहाय अति निकायस्वाहा ॥ पूर्व
 ॐ भन ॥ ॐ जां असाय दूहा ॥ वट
 जिह्वा कृदन ॥ ॐ जां व रुन् पायस्वा
 हा ॥ मध्य ॥ घृताश्रुति ॥ ॐ ति
 जिह्वा कृदन ॥ ॥ ॥

तनाघृताश्रुति विसं ॥ प्रिदव ३ ॥
 ॐ आदि विसं ॥ ॐ जां लूं ॐ आ
 यवजहसाय अना धिपय स्वाहा ॥
 ॐ जां नूंक अग्नि ॥ किहसाय तजा धि
 फसाहा ॥ ॐ जां मूं यमाय दलुहसा

धप्रताधिकयस्वाहा ॥ ॐ जां दूं ने
 मत्याय वगुहस्ताय नक्तसाधिक
 यस्वाहा ॥ ॐ जां वूं वनूस्थाय पास
 हस्ताय जलाधिकयस्वाहा ॥ ॐ
 जां यूं वायुवैधजहस्ताय यवस्थ
 ष्टिकयस्वाहा ॥ ॐ जां सूं कुवलाय
 गजहस्ताय धनाधिपयस्वाहा ॥
 ॐ जां दूं लीक्ष्मनाय त्रिभूलहस्ताय
 कुताधिकयस्वाहा ॥ ॐ जां अं अनर्क
 यवजहस्ताय नागाधिपयस्वाहा ॥
 ॐ जां ॐ वज्राय वज्रहस्ताय स्वर्गा
 ष्टिकयस्वाहा ॥ ॐ तिलोकपाल ॥ ॥

तताहृदकादिविस्मह ॥ ॐ जां रु उ
 के दं गुणनाय स्वाहा ॥ ॐ जां वि पूवा
 नक्तदं गुणनाय स्वाहा ॥ ॐ जां अग्नि
 त्रिकां दं गुणालाय स्वाहा ॥ ॐ जां का
 लां दं गुणालाय स्वाहा ॥ ॐ जां क ना
 लिनं दं गुणालाय स्वाहा ॥ ॐ जां उ
 कपादं दं गुणालाय स्वाहा ॥ ॐ जां
 हीमनूपादं गुणालाय स्वाहा ॥ ॐ
 जां जामलादं गुणालाय स्वाहा ॥ ॐ
 जां कूर्मपृष्ठदं गुणालाय स्वाहा ॥
 ॥ ॥ ॐ तिरुहृदकादि ॥ ॥

नमो प्रयाग दिविस्मृतं ॥ ॐ ज्ञां प्र या
ग देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां व न
देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां का ना पू ल
देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां अ द्वा र स
देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां उ ग्रं ति
पू न देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां व नि द
देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां उ का मू क दे
देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां इ वी को र्क
देवपालाय स्वाहा ॥ ॐ ति प्र या ग दि ॥

नमो अग्निताम्रा दिविस्मृतं ॥ ॐ ज्ञां अ
ग्नि त म्ने न वा य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां नू न
हे न वा य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां च शु हे न वा य
स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां क्रा ध हे न वा य स्वाहा ॥
ॐ ज्ञां उ न्म ह र हे न वा य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां
क पा लि स र हे न वा य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां ह्री
म ह र हे न वा य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां सं ह न र हे
न वा य स्वाहा ॥ ॐ ति अग्निताम्रा दि ॥

नमो वृक्षान्ना दिविस्मृतं ॥ ॐ ज्ञां अ वृ
क्षाय नि स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां कं मा ह र व नी
स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां वं को मा नि स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां
टं वे कू वी स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां तं वा ना ही स्वा
हा ॥ ॐ ज्ञां यं ॐ त्रा य नी स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां
यं वा मू उा य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां मं म हा ल
श्री स्वाहा ॥ ॐ ति वृक्षान्ना दि ॥ ॥

कलसयात आरुतिवियमनु ॥ ॐ जूं
सहस्रा ॥ थलिलियातं आरुतिवि
यमनु ॥ हं र सें र साहा ॥ पं र र
लयातं आरुतिवियमनु ॥ नवग्रह
यामनु ॥ वलियातं क्षण ॥ कू
फयातं सें र साहा ॥ पं र वलियातं
॥ वृक्षापनितयातं ॥ चउर्धदि ॥ अग्नि
रुधुहाउदन्द ॥ धनं सें आरुतिविय ॥
धाययादवर्क विदवआदिन समर्क
वियमाल ॥ ॥ सूर्यर्क ॥ वंउयातं
॥ पञ्चपतिर्क ॥ वल्लुग्वीर्क ॥ दम्भापा
तन ॥ म्भालाहआदिन नवपी०यातं
विय ॥ हे नवशर्क ॥ नकिनिशर्क ॥
इमाइर्क ॥ धाययाअनूकमन माल
काखायमाल धनं सें धव २मनु ॥
धृतारुतिवियमाल ॥ ॥ पूर्ण
यातं आरुतिवियमनु ॥ ॐ जूं जूं
खन्दमहाह नवायसाहा ॥ ध
न ३४ ॥ पूर्णवाक् ॥ हाकिप्राधच
नाग्रनारुतवहा वृक्षाकउमिस्त
कातज व्युअ समाकलायल कला
वालाकहावागुना ॥ मायासकवि
पकलक कलितं मूलक विधानि
का जाता ॥ मेमिसमस्त कामजन
निहाकिव प्रासाहवीत ॥ अग्नि
गृष्टि पूर्णसमस्त सुखाहा ॥ ॥
धनं धृतारुतियामाल पूर्ण ॥ ॥

कता होमपाण्डुदि॥ ५॥ अं अक्रायकृद
॥ अर्घपाण्डुलखनहाय ॥ अग्नि स
मान अस्ममकुन धान ३ चतन स
स्तिकचाय ॥ स्यं होममल अकत
इइ धवि धलज अलि धतेनवा
ले ॥ व्यालसि धूलिकापेल १ छिन
धिपू २ अइवालपाट २ अण्यमालि
धत होमपाण्डुसतयाव ॥ यजमान
स्यं लवकातकं ॥ वायु ॥ नमामि पाव
कातं अं प्रविजं सर्वकर्मसु ॥ वेत्तानना
महातजां दवानां रुच्यदाजकं ॥ सर्वक
र्मानिष्ठ सित्वं आर्क्ष हाजनकानकं
अग्नि यादिसनाथय मेलावहित
का मया ॥ संप्रार्क्षतवूनित्यानि यं
कर्मसु दामिच ॥ आचार्ययनमः
मुत्तं नमस्तुभ्यं किदायकं ॥ दधिहा
मा पूजापूक्तिः १ न होमनष्टमि कं
। यत्मासक्तु घृतं कृत्वा अगव्याधिवि
नासर्न ॥ वायु इष्टानि लोहमाः
आयुर्वृद्धिजवस्तु १ पूष्टिमेवसदा
होमां प्रियकंतलुलः प्रिय ॥ अर्का
नासहितव्याधिव उपलासका म
दं ॥ रतद्रव अर्थना हाय अपामार्ग
वरुपूकं ॥ सनिसमयतपापं सो
लहूमधु अम्वरी ॥ अचल्ललहव
कामं इष्टा आयुश्च वदनी ॥ कृण

दत्त विनंजी वं प्रत्युप्र आये का
 कं ॥ ॥ आ वा य मू रं खं ह व
 पा उं उप दा ह या मि ॥ य ज मा न स्य
 आ वा य ह वे पा ग ज्ञा य ॥ वा 'का
 द न वा य ॥ आ वा य द क ॥ ह व पा
 प्र ष उ र द स यू जा ॥ धा उ स स मा ध
 आ म्ना ता ॥ ॥ वा य ॥ त्व म
 (म्रे नी स व रं त ऊं या व नं च न मं म स
 त स्मा न त व दि ह त्प द मं क्का प्य क
 प्य या मि तं ॥ ध रं मू ग्नि स क प्रार्थ
 ना या य ॥ ॥ ॥

न ता ति ला कृ ति वि स्मं ह ॥ घृ ता कृ ति
 वि या कृ थ र्ण ॥ पि द वे ग्रा दि न स म स
 गु ति घृ ता कृ ति वि ला उ ति ति ला कृ
 ति स्वा द नं वि य म्ना ल ॥ धा न ३ ॥ ॥
 मु ज्ञा व न या तं मं कृ ति वि थ म नु ॥
 मं गी गूं ग ४ मं ४ कृ त्ते ग ४ म्ना
 य स्वा हा ॥ ता ५ ॥ हं ता वी षा त्या दि ॥
 सि न धि तं च दु वा न धि य कं ॥ ॥
 म्ना ल मे व य या त म नु ॥ श्री जी ५ कृ
 ल पू ग व द क ना थ य स्वा हा ॥ ता ५
 ॥ व का म्भ नं त्या दि ॥ ॥ वी ति या
 तं ५ दा दां कं कं ४ कृ ग पा ला य
 स्वा हा ॥ ता ५ ॥ पि ग्म धि त्या दि ॥ ॥

आपकंसदा सिन्धुनवर्षकना
वाकि १ सायधधवली मयनग
ग्राप्रसिफायादता ॥ नाना पाप क
धसिनी उरकनी मज्जावली पूजि
नी ॥ कामात्री पनलासिनी विपूह
नी दवी सदा पादुव ॥ ॥

कुं जां टं वेङ्गवी स्वाहा ३ ॥ हिनधि।
वनगत ॥ तागु ॥ नेअखपनी वासि
नी स्वगगता दूर्वादला हातनु ॥ द
वी श्री सति हस्तिचक्रधरनी
दवी वेङ्गवी ॥ कृष्णकावकदेव वृ
कतलग्न देव्यागविध्वंसनी ॥
सादवी प्रददातु मजनधर्मे श्रीचाह
हास्कास्काता ॥ ॥ ॥

कुं जां रं वावाही स्वाहा ॥ हिनधि।
द्वल ॥ तागु ॥ क्रीडास्याननवर्ष
सन्निहातनु मीनादतायावनी
लूलापाकमदहस्तिगकदाकीता
यधसंस्तुता ॥ होठोलं कतमू
मालधरनी दावागी केशवहालावी
वृष्णादिनासिनी हयकवी नका
कन्यादुजनान ॥ ॥ ॥

कुं जां यं ज्ञायनी स्वाहा ॥ हिन
धि ॥ सनिकल ॥ तागु ॥ माटं ग

१ गद्यनष्टयानगमनिदस्तालि
सम्पादता तेषिजाकलकुम्भवि
न सदापंचापमावर्तनी ॥ अत्रानी
सूनप्रजिनीसूनयनी वायुयाका
ष्टासतापापाईरवतामहाकल्प
हावतासुवाघातनी ॥

ॐ जांयं चामुयसाहा ॥ ३ ॥
सिनधि ॥ वडसि ॥ ताय ॥ दूर्ग इ
गर्जनीवासनी कतनूवेतालासं
नाहिनी ॥ चामुहाहितलीषनी उ
कटिहाइष्टाकलाधनसि ॥ खड्ग
रुटकायानतामवधनूग्रीविन्दुम
डाधनी ॥ कोवनासुतचष्टिकाः
डातनविदुल्यानिर्नपादुव ॥

ॐ जांजां महालक्ष्मीसाहा ॥ ३ ॥ सिन
धि ॥ कृष्ण ॥ साय ॥ दवीकादमना
हनाष्टनदनजेशमनविगवासिनी ॥
पञ्चैष्टाहमहहमसिनी सदा प्र
रुन्दुवेष्टाकला ॥ विष्टाकाटिस
मानकलुलधनी हानावनी उधि
नी ॥ लक्ष्मी प्रदमहानूहावलव
मीपापाइवनेसदा ॥ ॐ त्रिवक्त्र
न्यादि ॥

ततायागिनी ॥ ॐ जां जां जां नि
 स्वाहा ३ ॥ सिनधि ॥ तग ॥ सि
 धन पूं जस दह ननवा नू (न) जो
 न काश्चवा मृतसाहान ननमू
 माला ॥ काश्याधुता सनयतां न
 खविन्दुहस्तान्मे नमाः सुसग
 तं कूलजोगमाया ॥ ॥
 ॥ ॥ ॐ तियागिनि ॥ ॥

ग्वाखनया तं आरुतिविये मन्त्र
 ॐ जां जां जां च म्बन्धमहाह नवा
 यस्वाहा ३ सिनधि प्रानाब्रह्म
 कपालमूकलतलं कलमूवान
 वपुः सविरुषदुषानहानवधव
 लादवास्त्रिमालासज्ज ॥ विद्युति
 क्रविगयसाधनविधिः पुत्र्यापि
 संहतयया पार्श्वपनया वसानस
 मये कापाविकाष्ठाकन ॥ ॥

मूलदविसं आरुतिविय मूलम
 नूनधन १०८ तग मालेल
 का प्रतिष्ठितादिदवदिपुप्रति
 स्थापुवनपर्य ॥ सानिधं प्रतिप
 ज्ञानां यजमानाय वृद्धय ॥ सना
 मुतिपदलीनं सना नानुकार्येव
 व ॥ यजमानसं मुकार्यस्वपूजपु

तां भवें ॥ न कर्त्तुं सर्व काल न दहा
न नवननमा मृत ॥ दवया गउलि
नत्वायें ॥ पउजाग ॥ हिट ॥ ॥
धत दवा चन विधि ॥ ॥

तता पचेरु ना वाय ॥ तथ ग्वउस
मय पादु. चेल वाक. हाक. पा
ल. पाल. चेत. सिन्धु. जजमका
त्वानम ॥ पूजन ॥ जल्मां मजन
धारायां पाइकां ॥ यं ॥ ध्व
उस ॥ हि ॥ मां नक ॥ धा ना
पां पाइकां ॥ ॥ यो थ ग्वउस
॥ इइ ॥ प ॥ मां दिन धा ना
यां पाइकां ॥ यं ॥ ध्व
नासाक ॥ मां गं ॥ धा धक धा
नासा पा ॥ ॥ इकां ॥ दथ ग्वउ
स ॥ धं ॥ ॥ मां वी धा ना यां
पाइकां ॥ ॥ ॥ मा सा इति
पीत. लाकार (ध) १०८ ॥ ॥
मलामूलनय ॥ वासल कथ ॥ ॥
॥ ॥ हिल निनी दत्तादि ॥
उस सान ॥ पंचा मृत नत्वा न
म. उस पचेरु नत्वा ॥ धत. सिंधु
जजमका दिष्टि. त्वान. मादु पात

नयय. आरुर्लु. खलन मांसाकृति
 ॥ लामूलप ॥ हलछिचि. चकन ॥
 पूजन ॥ छउकन ॥ आवाय ॥ धन
 मूया ॥ यजमान. जापयक ॥ वाक्क.
 सहरधनचवायानि. क्कागस्यपिसि
 नकृत ॥ ठिकात्तंवासमकंदु. सह
 मुंदनतत्वया ॥ सिद्धतमासहाम
 न. कोजायदधिसंशतं ॥ यवकीना
 लुहामन. सातिगलुलसाधिमं ॥
 प्रायतगुहिरवादवदस्यधुन्यधा
 ननृपवृक ॥ क्कागमांसकलंघंच
 प्रानृगजवेपानृत ॥ दीनालुधर
 वरुवेसाकि. दधिनापृष्टिप्रजाय
 त ॥ आचार्यदधिना ॥ यजमान
 स्य. आचार्यज्ञाय ॥ वाक्क. आचार्या
 यमूलका. क्कागसिन. मांस. पाया
 उपदाप्रयासि ॥ ॥

पक्केषालाज्ञाय ॥ क्काग ॥ मसन
 प्राचिकानायां. विधिनासरुलप्र
 दा ॥ पूर्व ॥ नकाधनागुयोम्यायां
 व्याधिनासरुलप्रदा ॥ दक्षिण ॥
 कीचवपम्भिमकायां. आयुव
 दिरुलप्रदा ॥ पम्भिम ॥ उरुनस
 गंधकायां. मक्षसंपिसकावकी ॥

मध्य ॥ पंचधनाप्रसिद्धानि उद्धकर्मा
 निसिद्धिनि ॥ ॥ वलखनि कर्मा
 दय ॥ गौतम कर्मा ॥ ॥ गौतम
 दय ॥ कर्मा गौतम ॥ ॥ हिनज
 पत्रय मनु ॥ अथान. वडा ॥ वतिसि
 ३२ ॥ हंते संते ॥ गवयशुलं अथ
 यथा मूलमनुन धान २१ ॥ स्वयं
 मूलमनुन धान २१ ॥ अथ मनु
 न धान २१ ॥ ॥ अथ मनुपलप
 ॥ ॥ अवलाहाथ. अव. अव
 लास दय ॥ खवलाहाथ. खव
 खवलास दय ॥ स्या. स्व. नूव
 उ. म. (का) स दय ॥ सिन दय. स्व
 न्द मूलमनुन दय ॥ ॥

नतामासा इति विस्पंद ॥ विदव ३
 पुष्पा. न्यादि ८ ॥ अग्नि १ ॥ अथान १
 धर्म. स्वकाटधन ॥ स्वस्वदवी र्मा
 काट १० ॥ ०० न्यादि १० ॥ हनुका
 दि १० ॥ अहिताका ॥ नवग्रह
 ॥ सानाठ आदिन पिठीयार्त ॥
 ह नवशर्मा १ ॥ नकिन शर्मा १ ॥
 इमा शर्मा १ ॥ ॥ पुं जां दुष्टाहा
 ॥ पुं जां स्वष्टाहा ॥ पुं जां दुष्टवष्टाहा
 पुं जां दक्ष पाटनाय स्वाहा ॥ ॥

ॐ जां काला पाटना यथाहा ॥ ॐ जां
 कृं स्वच्छन्द महाहेन वा यथाहा ॥
 धनं कं कृ काट धन ॥ पाटु लि स
 पच धालाया कृदु नृ २ मने ॥ ॥
 प्रभु वाक् ॥ दिग्द्वान्धेव सर्वे गदा
 वेदु क सहं यानि द्रु पालं ॥ थलि
 ल्या सर्वे दवा संगल गन यर्म मनु
 लो वृन्द शकं ॥ आर्य शकं च प्रभु
 अलिवलि सहितं । पञ्च पानादि
 शकं ॥ सटु स्ता सर्वे दवा अहि मुख
 न शता । पाटु कृदु नृ २ मने ॥ लं द
 कि ल्म ॥ समय सत ॥ सला मूल ॥
 लं क्क ॥ खानवा ॥ मृग ॥ कउ गुदि
 ॥ मास ॥ घाग ॥ अग्नि सक्काय ॥
 पञ्च धना क्राया कं ० न यजमान
 आदिन समय विसर्ग ॥ सला मू
 कउ ॥ नर्पन ॥ प्रो मप्र ता त्यादि ॥
 समय वियन धिय ॥ पाठ याय ॥ ॥
 ॐ ति मां सा कृति ॥ ॥

नवग्रह या तं आ कृति विग्रह ॥ आ
 दित्य या तं ॥ खानवा ॥ ॐ जां जां कृं
 सूर्या यथाहा ॥ धन ३ ॥ नका व
 ॐ महा तं ३ नका पद्य सधननी ॥
 सफा खन थ मा नृ ३ ग्रह ना ३ न मा म्प हं ॥

सामस्तु ॥ लयमल ॥ प्रां प्रां प्र सामा
यस्वाहा ॥ धाव ३ ॥ ता ७ ॥ अ म ना
समाहातर्क पृष्ठ नीक कनाधव ॥
हंसास्त्रस्किर्तंदवं नमामि मृतनन्द
ने ॥ ॥ अंगनस्तु ॥

प्रका ॥ कां कां कुं अंगनायस्वाहा
॥ सा ७ ॥ स्कंदनूपधनंदव हाकि
हस्तकतासने ॥ लाहिताममहा
तर्क ७ ७ तं वनमाम्यहं ॥ ॥

वृद्धया ॥ न का ॥ वां वां वृं वृधायस्वा
हा ॥ ता ७ ॥ पद्मासनस्किर्तंदव सो
म्यं वृणुतामिता ॥ नायसाधिद
वर्षा वृद्धनूपनमाम्यहं ॥ ॥

वृहस्पतिस्तु ॥ लं का ॥ कां कां कुं
वृहस्पतयस्वाहा ॥ सा ७ ॥ वाच
स्पतिमहादीर्घा पिताम्यनविशु
षितं ॥ उकादीनागुर्वताचैः तस्मै
नागुर्वनमः ॥ ॥

उकस्तु ॥ कठगुह्मि ॥ दां दां दूं उका
यस्वाहा ॥ उकंदस्यगुर्वदव उ
उनुपमहाकवी ॥ उकाधिदवता
ऊर्ध्व नमामि रगुनन्दन ॥ ॥

६ ६ ६
६ निश्च वस्तु ॥ मास ॥ अंगीर्ष ६
निश्च वायवाहा ३ ॥ स्तोत्र ॥ दिवा
कवस्तु ग्रीमान काया द्वादशन
न्दन ॥ नीलाञ्जनेन वा दीपि कृत्स्नं
नोमिदानीन्धन ॥ ॥

५ ५ ५
नाशुक्तं ॥ शान्त ॥ अंगीर्ष नाशुक्त
रा ॥ स्तोत्र ॥ काला दीर्घमहाका
मिहकाकनसंरुव ॥ अर्द्धाङ्गक
वर्द्धनं नमामि नाशुक्तवता ॥ ॥

कदुयार्त्तं ॥ कलात ॥ ह्रीं ह्रीं कदु
वत्वाहा ॥ ३ ॥ अर्द्धाङ्गक
खड्गहस्तविचिगुर्क ॥ यमिना
फसंयुक्तं नमामि कदुदवता ॥ ॥

जम्भया ॥ अक्षत ॥ ज्ञां ज्ञां जम्भ
नखाहा ३ ॥ स्तोत्र ॥ श्वेतस्वनाम्भ
धना स्वतचक्रनमुषिर्त ॥ उमया
सहिगादवज्जम्भदर्वनमाम्भ ॥ ॥

॥ ॥ ॐ नित्यवग्रह ॥ ॥

तता बुद्ध्यादिविषय ॥ बुद्ध्यानि
स्तं ॥ पूर्वा ॥ मन्त्र ॥ ॐ ज्ञां ॐ बुद्ध्या
नीखाहा ॥ श्वेतवि ॥ यत्ना मे ॥ स्तो
त्र ॥ बुद्ध्यानीवववाहनं पुवदनी

हृत्पद्मिता सुन्दरी ॥ साक्षात्सुग
कमलुल. धृत कनी के ल्यान कार्ण
कनी ॥ सुवेर्णदधिर्न पकादपिपना
पितामहासर्वदा तान्दवी सततं न
सामि हिनसा संसा नसा नप्रदा ॥ १ ॥

माहृष्यनी सु ॥ माय ॥ ॐ जां कं मा
हृष्यनी स्वाहा ॥ हिनधि ॥ अर्क ॥
साग ॥ नूडानी नून कनजि ता
हिश्रुतं हीषनो हिचनया पुहा
नूजमनि ॥ हूलै अक कनाग (१)
पूवधितं दवी परा मालनी तान्दवी
सततं नसामि सिनसा भोगति स
नायहा ॥ २ ॥

कोमावि सु ॥ नूप ॥ मनु ॥ ॐ जां वं
कोमानी स्वाहा ॥ सिनधि ॥ स्वपल ॥
साग ॥ कोमानी सिधि वाहन कुसले
या. हाकि धता सुन्दरी सादवी सत
सि नूहा गुवग ह्म सुप्रजिता सर्वदा
॥ सार्न सा नपुवर्ति तपुहानि (२)
सोहा सुसिद्धि कवी १२ दावि डइषः
पहा ॥ ३ ॥

वेकृवि सु ॥ मृग ॥ मनु ॥ ॐ जां टं
वेकृवि स्वाहा ॥ सिनधि ॥ वलंगत ॥
साग ॥ हरिचक्रमनू सुपंकलतल

अस्मा गदा देहा हा वंवा कफ्फु उजं
गनत्रनिकले विन्वसदा ला कपा
॥ ता सा न व द्रुमे द व नु निलगा वि
स्मन्व नी वे क्क वी १२ विस्व र ना व्या
पिनी ॥ ४ ॥

वा वा हि सुं ॥ तिसि ॥ मनु ॥ पुं जां नं
वा वा ही स्वा हा ॥ सिनधि ॥ इन्द्रा ॥
स्का ॥ वा वा हि व नू क्षा स या ग त व
ति प्रा द न नु सि ध ता उ लुं द्या ट वि
द्या ट द्या ट द्य ट ने द्य क्ष न वा घ र्घ नी
॥ सं ग्र म पि द स म्भ व स्य म ह य न द
व सा पी ज न जा १२ वा क्का र्थ सिद्धि
कनी ॥ ५ ॥

ॐ न्दानी सुं ॥ पठ मा स ॥ मनु ॥ पुं जां
य ॐ न्दानी स्वा हा ॥ सिनधि ॥ म सि
क ल ॥ स्का ॥ ॐ न्दानी ॐ हिला सिनी
प्रवलिता ल श्री प्रजा प्रकृ ला व डं
ऊ र पु म ख लं ध त व ति त ड प्र हा मा
ल नी ॥ कृ ष्ण पी ठि वि षु द्ध द न नि क ले
सं दि पि ता स र्व रा १२ स्व का र्त्ति स न्ता
प हा ॥ ६ ॥

वा मू ल्म सुं ॥ उ ति ॥ मनु ॥ पुं जां यं
वा मू ल्म य स्वा हा ॥ सिनधि ॥ व उ सिं
स्का ॥ वा मू ल्म व ल व लु मू लु द ल
नी सा हि ष नि णा स नी सा द्र ला वि

नरुञ्जचर्मरुलकं हाकिं व म
हं धतं ॥ पासन्ना मनहि सि पा
लगनखक्यां कसाधनीनी १२
हिताथ हयनासनि ॥ १ ॥

महाल श्रीस्तं ॥ ॐ ॥ मनु ॥ ॐ जा
हं महाल श्रीसाहा ३ ॥ सिन वि
॥ कृष्ण ॥ ॐ ॥ आ गमी दुव न ह
नी पुन वनी संग्रम सिद्धि कनी अ
कन्ना मना देत्य किं न न न वे संप्रति
ता सर्वदा ॥ जाति चं पक कर्तु का
न न कत प्रलुङ्ग गग माग क्तय ना
न्द वी सतत न मा मि सिन सा ल श्री
प्रताप कला ॥ ८ ॥ ॐ ति वृक्षा नादि

अस्य सा मादि ॥ अक्षचि वं जी वा यार्त
आ रुति वि यधन ३ ॥ विहाय वा ॥
मनु ॥ ॐ अस्य स्त्वा नाय स्वाहा ॥ १५ ॥
वस्त्र जाति न म सुत्ये डा ना वा र्था गु
माहवी ॥ वद वदा असे प्रलुङ्ग मस्य स्त्वा
माय वे न म ४ ॥ १ ॥ ॥

वलियातं ॥ प्रका ॥ ॐ वं वलि व स्वा
हा ॥ ॐ मि स्वर्ग गसं प्राप्ति उ मि
दान न म स्तुतं ॥ स्रुद वरु वि द
नि न मा मि वलि व न म ३ ॥ ॥

॥ २ ॥ व्यासयात ॥ अक्षत ॥ ॐ व्या
सायसाहा ॥ स्तोत्र ॥ सर्वसाक्षात्
हानव्या. तत्र कार्यप्रतिष्ठित ॥ प्र
वेका. मित्रमास्तु व्यं नमस्तु व्यासद
वता ॥ ३ ॥ ॥

हनूमन्नायात ॥ कच्छुति ॥ ॐ हनूम
नायेसाहा ॥ नक्तवर्षमहावीर्यं वा
यस्पृष्टतिलावन ॥ कक्षुसुलं दलं
प्रति. हनूमन्नायेन नमः ॥ ४ ॥

विहीषनयात ॥ चाट ॥ ॐ विहीष
मयसाहा ॥ यालजातिनमस्तु
लं कायासहवस्तुम ॥ वाकसाधि
पतिं दत्त. नमामिस्तु विहीषता ॥ ५ ॥

कपाचार्ययात ॥ मास ॥ ॐ कपा
साहा ॥ नाजनीक्षिनमस्तु. लान
वाजकुलारव ॥ कपध्वनदुमादु
त्यं धीनाहवदुविक्रम ॥ ६ ॥

पन्नपुत्राययात ॥ मृग ॥ ॐ पन्नपु
त्रमायसाहा ॥ कार्तिकावीवनस्य
नि. पन्नपुत्रस्तुमहावल ॥ कपध्वनदु
मादुत्यं धीनिर्द्विजकविहस्तापन्न
पुत्रमाययेनमः ॥ ७ ॥

मार्कलयात ॥ र्यका ॥ ॐ मार्कलया

स्वाहा ॥ वट वृक्ष समावृतं कृष्णमर्क
कुवा सप्त ॥ वाज्रवीचि नक्षत्रं मारुत
भुवनेन नमः ॥ ८ ॥ ॥
ॐ ति अष्टविल जीवी ॥ ॥

ॐ न्यादिलाकपालस्तं ॥ आ इति ति
सौह ॥ ॥ तता ॐ न्या ॥ ॐ ज्ञं लं
ॐ न्याय स्वाहा ॥ धन ३ ॥ स्नाय ॥ न्या
वटग गावृतं सप्त अष्टविलुत्र ध्वनी ॥
पातवर्तु महा तं ॐ वज्रपाणि नमः ॥ १
अग्निस्तं ॥ ॐ ज्ञं न्या ॥ अमय स्वाहा ॥ ॥ १
अग्नि अजसना धर्मय महा तं ॥ अम
द्वया ॥ काला माना विद्वया य ॥ किं
स्तं नमाम्यहं ॥ १ ॥ ॥

जमस्तं ॥ मनु ॥ ॐ ज्ञं न्या ॥ जमा य स्वाहा ॥
स्नाय ॥ महीधंस्तं दगनाय दलुहस्तं
रथं कर्तुं ॥ कालपा सधनं हस्तं ध्याय
दक्षिण दिग्यति ॥ ३ ॥ ॥

नेमस्तं ॥ मनु ॥ ॐ ज्ञं न्या ॥ नेमस्तं न्याय
स्वाहा ॥ स्नाय ॥ नेमस्तं अग्निहस्तायः
घोत्रं ॥ ३ ॥ दक्षतानं ॥ न केन ५ समा
वृतं नीलोत्पल दल पुहं ॥ ४ ॥ ॥

वनस्तं ॥ मनु ॥ ॐ ज्ञं न्या ॥ वनस्तं न्याय
स्वाहा ॥ वनस्तं मकुमास्त्राय सप्त
दक्षिण दिग्यति ॥ नागपा सधनं हस्तं
नमस्तं नमः ॥ ५ ॥ ॥

वायु नमः ॥ मन्त्र ॥ ॐ जां यं वायु वा
साहा ॥ वायु वध इह साधे भवेत्
वैद्य व्यापक ॥ प्राण हर्तुं न तु ना नां ह
विनमः न नाम्ना ॥ ३ ॥

कवच नमः ॥ मन्त्र ॥ ॐ जां सं कवचा य
साहा ॥ सा ॥ कवचं मस्ते माही नः
खर्व गमहा दनं ॥ सत्वर्तुन कूल
हस्तं पुनम्य मूलना पति ॥ १ ॥

ॐ नमः ॥ मन्त्र ॥ ॐ जां कूं ॐ नमः
नाय साहा ॥ सा ॥ वृषसं कूं नमः
नं सर्व उरु सदा विव ॥ काल सदा वि
हवाय गूल पाणि नमाम् ॥ ८ ॥

अहस्तं ॥ मन्त्र ॥ ॐ जां अं अन नाय सा
हा ॥ सा ॥ अन नं पूरु नी का ह
नाना दलु न इत ॥ विष्णु नाम प्रति
का सं कर्मा वृत्तं प्र पूजय ॥ २ ॥

उडस्तं ॥ मन्त्र ॥ ॐ जां ॐ पुने क्रा ल सा
हा ॥ सा ॥ यानं पानं चतुर्वा ह वृष
नं चतुर्वा ननं ॥ हंस जान पति का सं
दलु अ क म लु ले ॥ १० ॥

धतस्तं धव धव मन्त्र न आ कृति वि
य ॥ धीव ३ ॥ ॐ निला कपाल ॥

यजमास्तं आ कृति विय ॥ ॐ शं स ४

साहा॥ धाव ३ ॥ ॥ आचार्यः
आकृतिविय॥ कुं जां जीं कुं आचार्य
यमकुमिद्धि नमुसाहाक्ष ५४ ॥
॥ ॥ दक्ष पातनेविय ॥ ॥
सानिकविय॥ मनु॥ कुं कुं कुं व जां
कुं रुट सानि नमुसाहा ॥ आकृति
धाव १०८ ॥ हा म पा गु स चा द हि
नधि क पू ध ल स चा धा ल थ हा व
इय मनु ॥ कुं जां जीं कुं स च न म
हा न वा थ पू धि न मु सा हा क्ष १०८
हा म पा गु स चा द हि न धि क पू इ
य ॥ ध म नु न ॥ ॥ ध म नु न
ज व ध न्या वि वि स्तं रु ॥ ज व ॥ त्यं
कुं ॥ ध न्य सान वा ॥ ला जा ॥ ता य
स मि ध हि न धि ॥ गु ठा गु न ठा जा
वे नी रु ल व्या ल ॥ ज प ल य म नु ॥
स्व त्व दे वा म म नु न धा न १०८ ॥
द द ठा गु न धा नि जा ॥ व द ति रु ल क
ल म ॥ प र्यं गु ॥ स म र व ॥ स त मू षा ॥
च त ति ल हा य म ल ॥ रु कृ ति लः
हा कृ हा म ल ॥ न कृ ति ल आ कृ हा
म ॥ म न य पि प नि ॥ कुं वि ॥ धि कृ
थि रु ला ॥ रु न उ व रु न उ अ व ल ॥
नू प कं हा न ॥ प द कं हा न ॥ व लु न
गु लि १०८ ॥ अ गु लि गु गु लि ॥

प्रास्वस्त्यु ॥ कर्पूल ॥ कसुनि ॥ सर्वाष
 धि ॥ कलु ॥ हाक ॥ मूलदन ॥ रुल
 लय ॥ पकानमरि ॥ ॐ कः ॥ या नि
 या अकग १०८ ॥ निया वारुल १०८
 धन अर्घपाशुसग ॥ त्वकन्दमसु ॥
 अकलनसर्गशक्यातधाव १० ८

देहावलि विय ॥ प्रिदव ॥ वृक्ष न्या
 दि ॥ अक्षिताक्षदि ॥ हनुकादि ॥
 अऊनोदि ॥ चतुषवि ॥ महावलिः
 ॥ आकृति विय ॥ कृष्ण ॥ कृष्ण या
 कृतिपद पाव ॥ विय क ॥ ॥

आचार्य पूजा ॥ अन्नसंकल्प ॥
 दिगपूजा ॥ घृताकृति विय ॥ त्वक
 न्दमकुन अकलनसर्गशक्यात

* धान १०८ गभयणिनेकनवप घृ
 ताकृति विय ॥ ॐ आदि १० दहाकृ
 ति विय ॥ चतुवानकनलधमकु
 न्दयस्वाहा ॥ नाकसेयस्वाहा ॥ नाग
 यस्वाहा ॥ नदंय यस्वाहा ॥ नादि
 यस्वाहा ॥ विश्वगर्भ यस्वाहा ॥ क
 र्पालयस्वाहा ॥ उत यस्वाहा ॥ ॥
 दक्षि ॥ दसवलि विसर्जन ॥ अस्त
 मकुनैपविष्णुमाचनं ॥
 पूजुयार्तं आकृति विय मकु ॥

* अक्षिताक्षदि ॥ हनुकादि ॥
 अऊनोदि ॥ चतुषवि ॥ महावलिः
 ॥ आकृति विय ॥ कृष्ण ॥ कृष्ण या
 कृतिपद पाव ॥ विय क ॥ ॥
 ०८

पुं जां कीं हं च ॥ नमो हरे नवा यथा
 हा धन ७४ स्वस्वदवी समुत्तुन ॥
 धन १०८ ॥ प्रवासवतसिंधुः खान
 अद्वातये ॥ जजमानस्य धवकः
 जानका ॥ आचार्यनप्रवागानिके ।
 प्रभुवाक् ॥ वधाषत्वाङ्क १६ क
 पिलमूनशगासुल्लं प्रभाणी द
 लायताउमार्ज्जुनाङ्किकरसका स
 वनाकांनकपद ॥ प्रभुनका नम
 रामहिम ४३ मादाये पात्रपायाकु
 दवा पत्रमूनित्वया हरे नवा कालला
 त्यास्वस्वदवी सा ॥ सर्वसंप्रभुं रु
 तिसमूरुमुखाहा ॥ स्वच्छन्दमूलः
 मनुनप्रभु ॥ वृत्तिप्रभुं रुति ॥ ॥

प्रवा अर्धमूर्खदत्ता ॥ मलुलं काम
 य ७ ॥ खानकवाय ॥ असंसापथत
 सयाजातसंसाङ्कत्यादि ॥ स्वस्वदवी
 ससाङ्क ॥ ॥ असंसाप १०५ ॥
 सयाजातसंसाङ्कत्यादि ॥ ॥ उका
 नक ॥ आत्मजमीर्वाद ॥ अर्धपूर्वः
 अरुन ॥ वृत्तयनितविसर्जन ॥ व
 रुदिया कृष्णप्रकि कायावरुन ॥
 वनितया लंखनलय ॥ उकारेवा
 यवीजं त्यादि ॥ कृष्णप्रनिसइय ॥
 वाक् ॥ अर्धनासहितव्याधियु

पलासकामदं॥स्वरुनंअर्थलाहाय
 अपामोर्गवदुपुर्क॥सनिममयत
 पापं सोहाहंमधुदुचनं॥असुहं
 लहवलासं दुर्वाजयुधवदनं कदा
 दव्यचिनेजीवप्रत्यधअभ्यकामनाथ
 कं॥ ॥वलिविसर्जन॥अनिसर्ज
 जलकाय॥अहविद्विर्जन॥गच्छ २ ४
 यंअसंआत्मासंसाववाहनं॥अथ व
 सलयादता॥तगगच्छतासनं ॥
 ततोसंघहाम॥ॐ जांकविलाग्नि य
 स्वाहा॥ॐ जांपिङ्गलाग्नि य स्वाहा ॥
 ॐ जांजथलाग्नि य स्वाहा॥ॐ जां नडा
 ग्नि य स्वाहा॥ॐ जां तजाग्नि य स्वाहा॥ॐ
 जांध्रुमाग्नि य स्वाहा॥ॐ जां सिवाग्नि
 य स्वाहा॥ॐ जां हे नवाय स्वाहा॥ॐ जां
 मासाग्नि य स्वाहा॥ॐ जां तजाग्नि य स्वा
 हा॥ॐ जां महातजाग्नि य स्वाहा॥धर्म
 दक्षिणि॥ ॥दक्षसदवदवीस
 क्तानं॥ब्रह्माअमिस इय॥मनु॥ॐ जां
 सकृताकृत स्वाहा॥ॐ जां इदृताकृ
 ता स्वाहा॥तामृतेदया॥अग्नि आ
 दिनविसर्जन॥यो स.लि काय॥ॐ
 जांददयाय नमः॥आत्मने नमः॥ हा
 मपागुहाकपूथक जयमालि वा
 दन उपलि॥हा मपागुतयावः
 म

१ सन्तते इह निमिनायुक्तदममि
आदिष्टेवान्धत्तद्वाहीरमुस्य
नीलदेवतास्तस्मान्नपिदनादीन
कमीरायानाजमेनमानसिंहव
द्विवीनसिंह अथैषकात्यापितना
उत्तरायिताहीलाभावाद्युत्तर

१५ माषिकात्रयीयवाक्यगुत्संकायगु
 मूलमसिधायनानंदवत्सलकेतन
 केनैलित्यलिकेनकमीषिकात्र
 मरुदाल्य=====

अधिकारदत्तदावसिष्यनकायवाक्य॥
कर्मण्यु मम नानादेवगणानि स्वस्ति
कर्मण्यु कर्मण्यु कामकर्मणिधिकारप्र
पयगद्वययुक्तमन्त्रादिकंयुत्रदागम
हकत्रिष्य

१२० नसापेक्षकवराय नासखगसाकधुय

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दादमालयक्रमदयदयकारासनेमालम

भाद्रपदशुक्लपक्षपूर्णिमापूर्वाह्णपूर्वार्द्धे

प्राप्तव्यं प्राप्तिं लब्ध्वा वा वाञ्छितं कन
प्राप्तव्यं प्राप्तिं लब्ध्वा वा वाञ्छितं कन

इत्युत्तरं यन्मित्रहीनादिना यत्तद्वदनादिपठे

॥ अनिप्रस्थानक कोमानी दीप रत्न ॥

मोप दद नमो नमो गायमात्रमत्य कोऊ

यद्गुणवर्जितं चालिमात्रं न दिवदुल्लेख्यते

॥ यि म क ने वि वि सु म् ॥

नमस्तु नमोय ॥ यथावानपहालानां
स्यादि ॥ ॥ दवस्तु सवापं पूजा
याय ॥ उकानक ॥ अश्वपूर्वस्नानका
काय ॥ वलि ॥ अय ॥ ॥ यजमान
स्तान्ति कमत ॥ निवक्तुनादियाय ॥
कसकनदुवासत ॥ कलसाहिषस
वत ॥ मिधु ॥ माहनी ॥ सग्नन ॥ खनि ॥
दवसस्नान ॥ पक्षेउशका ॥ थदि
लिजाय ॥ कुरु जाय ॥ आनयि ॥
रुक्तनकन ॥ समयविय ॥ कुरुल
प्रजाक्याय ॥ साद्विथय ॥ ॥
लिहावयाव ॥ कुरु कसालिंजागया
य ॥ मरुति ॥ अथ ॥ कुरु ॥ अथ
नकायाव ॥ सययाय ॥ दक्षिण ॥
उकानक ॥ अश्वपूर्व ॥ अश्विर्वादि
॥ कामालि विसर्जन ॥ अथया अ
नूकसनक्याय ॥ सादीभय ॥ ॥
रु ॥ कर्तृकपूजा ॥ अथ ॥ अ
कुरुयाय ॥ ॥ पक्षका कुरु
दवसकपूजावनमाल ॥ असाग
दयकाव ॥ ॥ ॥
॥ मिथीहवनवानिर्गुरुविधिसमाः
॥ ॥ ॥ गुरुपुयापञ्चलेव ॥

ॐ नमो महादेव वाय ॥

॥

सद्योजातससाङ्गः प्रवृत्तवदनं सर्वशका
मपदं गृह्णातं ललितं समो मयवर्नं श्री
वामदेवमाह सं ॥ ध्यानं ध्यानकना लया
नवदने ध्यानं मुखदक्षिणं प्रवृत्तत्येव
स्वस्वसानिवदनं वृक्षसुखा गवर्धनं
उद्धमाक्षपदं स्वध्वजा निवदनं धर्म
शिर्वधमात्मलिङ्गं कानकं सर्वरूपन
तास्तिनित्यजगतां जेलाकना धीनि
व ॥ ॐ नमो मृत्युञ्जयाय ॥

पुत्राः कुरुस्मन्नां जहिस कनिकनित्ता
पुतकर्षा न कानि ॥ अकार्त्तवर्धनं
चतुन कुजधनं दानं कुरुत्येव ॥
पूज्यं कुरुचरुक्तं धातिध कतिकर्न
दक्षवामतिमोहं ॥ मार्यमृत्यु जयि
ससकलरुयद्रुवं पादुमृत्यु जयि
स ॥ ॐ नमो गुरुदेवाय ॥ श्री

मर्द्धहालपाणिगुनवननमिर्तं दवद
वमनाहू नाकक्षा गममनु जगति
पुहकर्वसन्तुची जिवयुतं ॥ जकाना
गनाहिर्मनिजनसकले सिद्धि वि
द्याधले धी ॥ वन्ददिक्कालहा कदहा
सगनयनं विग्रहं काञ्चनाही ॥ ॥
ॐ नमो आलाकपालास्वसदिगवस
दासकुम्भसायूका ॥ आदित्यादि

ग्रहसाधनसुतिउवसदा ऊर्मदवाच
नृपो अदायामनुतिथ्यागलपुन
वदकाथभिलमाहकवा सिद्धिपु
याददाउरुतउवउमतिजहू प्रभु
उरामु॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो अग्ने॥ ॥ तजाहं दानि
विस्व रक्कलखरुलं पदुवंतु व
स॥ सर्वाय विस्व व्यापं मनिजननमि
तं तस्य तं हा कि हस्तं॥ जनाग्ने रा
ननात्मा कनमविनिकलं नृभू
क्काति हूँ वन्द्यवर्षा चक्रे दुहिज
निस्वि नृगुनं साविकलरुवर्क॥ वका
पुकाव हस्तपिपथयथगताग्नि
दवाग्निमाग॥ तत्त्वाग्निनिष्काला
त्वमसि प्रववमाग्निनिकालप्रवे
म॥ माता वदावसंगमिदुवन
उवनाग्निप्रकालासमस्त॥ दवी
संस्थास्व नृपाजयति च ऊगतां नित्य
नृगाहि वात्मा॥ उर्ध्ववक्त्रा लुख
लुसिततलगगनं हाककालड
वीर्ज॥ वानृत्मावक्रिवीर्जप्रवेन
सहयुतं साईमकावचलु॥ सवक
धार्वाग्नामपुनमयतनं दित्य हा
नं प्रवर्क॥ कृतायं हस्तपार्पददुव

वभुखसत्सरात्राजलक्षी सुप्रभा
नवक्रिनननसपनमविशसेन
मरुनमरु॥सर्वाकस्तल्पमरु
मपुनपुनपदंनिरुद्धिपुनाना
धानधीधानमरुमनमरुयह
नं.धानपापप्रधुम्॥सयंप्रीदव
दद्याजयदुवनसादाउकिमकि
प्रदावा॥जदन्याकचनत्वंनमनि
दिगुटिकापादुकादुवनत्वं॥पा
तालदिव्यसिद्धिदिवनमहिर्न
दिव्यचिन्तामनिध॥सिद्धिदद्या
षधीनापनपूनव्यसनंमनदंम
नुवादी॥उतयमेषसादास्तहव
मिरवतामग्निदवप्रसन्ना॥ब्र
ह्माविष्कृत्यसजावनतिमम
कनश्नकृपागिसमिव॥
जीजदस्यानकदन्तप्ररुगलस
हितं.सयुतंअरुनाग॥हेनष्ठा
सिद्धिवात्राइवितरुयहर्नचपु
स्त्यादिदवा॥आगिन्यासर्वद
वास्तुवननमिता॥पुवसर्व
दवा॥यावहाहाकवस्यपुवति
मपुवनयावहागमसर्गम॥याव
॥ओ॥मेननगमयागमलगलप
ति॥गमपनिर्वागलस॥याव

इन्द्राणुविष्णुसुतपतिसाहस्रतिष्ठ
 तमवृष्टिः ॥ तावत्सुप्रथमोऽस्य
 लोपविहृतं दानपूजाविधिना ॥ स
 कावा नपुसोतना कृतवहं दद्यादिपू
 र्णतथा ॥ नानाकामरुलोदयं कृत
 यत्तं संपूर्णकामप्रदं ॥ वरुणं वरुणि
 र्वाभिः प्रकटितं सिद्धानमन्त्रावितं
 ॥ दिव्या दारुतिदुतिष्ठरुगवा न
 धनन्दनपंथिवं ॥ ऊर्जयद्रूपसं
 द्यादिगविदिगसुमासंस्मितादवेता
 या ॥ ऊर्जवावकिमधसकलपनि
 जनमधुर्लथलुलवा ॥ तसर्वसंशु
 दवा अहिमतवनदामकुसुमावेम
 डा ॥ मृजपूजाविधानाय जनपविह
 र्त्तदीक्षदाषादयं शास्त्रावदास्य
 पादायज्ञनपनपदः ॥ मधवावह
 स्ता ॥ उवा अथर्वादितीयं सथपथ
 वेदनं व्याहितवृक्षदाषं ॥ मयणी
 यस्य मधुनयनमयनिषदुष्का ॥ अथ
 वृद्धा ॥ विष्णुः पुच्छन्दसुर्हितवदु
 केऽमतिजहं नृपिवराह ॥ सुधीनास
 र्वदवाहविसकलशना अग्निमूषा
 मिरुष्ठा ॥ इवापूरुर्गुसुहाय्यसकल
 पुण्यान्मनिकं पृष्टिजस्या ॥ सनात्वा
 तस्य सर्वअहिमतवनदासर्वसिद्धिद
 दं ॥ तान्दवीलोमिरुष्ठा सकलपुत्रग
 ॥ ऊर्जवृषिनमा ॥ ॥ ॥

अस्मन्मंगलार्थसंपुक्कलसकृदित्तिदि
द्वयमासुशीतावनदारुवन्दु ॥ १३
ॐ हृदयनायकसुनिमित्तिवार्थन ॥
सत्त्वानरुग्णालायवृक्षान्यादिः
असितामसहाहेनवायप्रयोगादि
ज्यादिद्यानिनि. सहिताय. गहा
बद्धक. दीपमालाय. हस्तकायसाङ्ग
नाय. सगहपनिवाकायदिगविदि
ग ०० भुविदहालाकपालाय. सु
शीतावनदारुवन्दु ॥ १४ नवानिजह
हृदयिकायमहत्यायथसाङ्ग
कुरुन्वत्तदायिनाहवन्दु ॥ १५
ममसर्वजन. हवन्तिपुनकदा
वानिपलपानिसर्वनःसर्वजनस
स्विनाहवन्दु ॥ १६ अत्रात्राद्यत्र
हंरुवन्दु ॥ आचार्यमनुसिद्धिबद्ध
नागाधर्मविजयबद्ध १७ प्रजास
विनसन्तु १८ सर्वसत्त्वाऽस्तिहव
दुःखवर्षेनकालवर्षिपर्युहंर
बद्ध १९ द्विपथवत्तथा नोभमि
रुवत्तु पृष्टिरुवन्दु ॥ ॥ देवा
वर्षेनकालेजनपतिवत्सुखास्यसंप
लुभाय. शिरायासन्तुगवान्यविपू
नतिपादुनाधनिये. सोयकासाधू
जीकलरुवन्तिजनाजानिदावाविना
सं. लोकांनारुकिरावा. प्रहवशविपू
लेरुकिरावा. पुहामु ॥ ॥